Efforts in reducing young infant mortality in Lucknow District: KGMU-GoUP-GOI-WHO partnership

KGMU-WHO team: Implementation research on Possible Serious Bacterial Infection in Lucknow District

सम्पूर्ण भारत मे नवजात बच्चो की मौत की दर 41/1000 है जबकि अकेले उत्तर प्रदेश में यह मृत्यु दर 63/1000 है। इस मृत्यु दर में 0-59 दिनों के बच्चो की संख्या सबसे अधिक है। एक अनुमान के मुताबिक 15 प्रतिशत शिशुओं में अधिक गंभीर जीवाणु संक्रमण (PSBI) में से एक या अधिक लक्षण मिलता है। और इनमें से एक चौथाई बच्चों के परिवार के सदस्यो द्वारा अपने बच्चे को भर्ती कर इलाज कराने से इंकार कर दिया जाता है। आधे से ज्यादा बच्चों के परिजन निजी/ अयोग्य चिकित्सकों अथवा झाड़फूक करने वालो के पास चले जाते है यही नवाजात बच्चो की उच्च मृत्यदर का कारण है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार (नेशनल हेल्थ मिशन) एवं किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के सहयोग से पी0एस0बी0आई0 के लक्षणों की शीध्र पहचान कर इससे होने वाले नवजात बच्चों की मौत को कम करने के उद्देश्य से एक शोध परियोजना पर कार्य किया जा रहा है। जिससे ऐसे बच्चों मे पी0एस0बी0आई0 को पहचान कर उनके उपचार के लिए उन्हे उचित सेण्टर पर भेजना, या घर के समीप उपचार मुहैया कराया जा सके और नवाजतो के जीवन की रक्षा किया जा सके।

परियोजना की प्रमुख अन्वेषक प्रो0 शैली अवस्थी, बाल रोग विभाग, के0जी0एम0यू0 है। इस परियोजना को लखनऊ जिले के माल, काकोरी, सरोजनी नगर और गोसाई गंज ब्लॉक में 1जून 2017 से चलया जा रहा है। डॉक्टर, ए0एन0एम, आशा को पी0एस0बी0आई0 के पहचान के लिए प्रशिक्षित किया गया है

और ए0एन0एम0 को को जेन्टामाइसिन के रेफरल खुराक देने के लिए प्रशिक्षित किया गया जिससे नवजात के जीवित रहने की संभावना बढ़ जाती है और उपचार मे देरी से बचा जाता है। जो लोग उच्च रेफरल सेण्टर जाने से इंकार करते है उन्हे घर के पास ही आउटपेशेण्ट/एम्बुलेटरी केयर के तहत एमाक्सिसिलिन को दिन मे दो बार मुख द्वारा मॉ के द्वारा एवं इंजेक्शन जेंटामाइसिन रोजाना सी0एच0सी0/पी0एच0सी0 पर डॉक्टर या ए0एन0एम0 के द्वारा दिया जाता है। परियोजना कर्मचारियो के निर्देशन में आशांओ द्वारा राष्ट्रीय गृह आधारित नवजात देखभाल कार्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सलाह दी जा रही है जहां वे बच्चे के जन्म के प्रथम 42 दिनों के अंदर 6 से 7 बार जाती है, जहां वह नवजात शिशु और मॉ की जांच करती है। इस प्रकार आशा पी0एस0बी0आई0 के लक्षणों की पहचान करने के लिए तत्पर रहती है। यदि निम्न मे से एक या अधिक लक्षण मौजूद हो - जहां जन्म से बच्चा मा का दूध या दूध न पी पा रहा हो, या पिना बंद कर दे या ठिक से ना पिये, आक्षेप, छाती मे गंभीर आरेखण, बुखार या गर्म स्पर्श(37.5 डिग्री सेंटीग्रेड या ऊपर), कम शरीर का तापमान या ठंड (35.5 डिग्री सेंटीग्रेड से भी कम) तेजी से श्वास लेना (60 से अधिक श्वासं प्रति मिनट), स्थानीय संक्रमण और पीलिया की जांच, उम्र बढ़ने की समस्याओं या कम वजन के कारण 7 दिनों से ऊपर की आयु में निमोनिया की पहचान करना है।

यह परियोजन पूर्व में काफी सफल रही है और इसे आशा बहुंओ द्वारा पी0एस0बी0आई0 के लक्षणों को पहचाना जाना और ए0एन0एम0 द्वारा रेफरल से पूर्व जेंटामाइसिन का डोज दिया जाना प्रशंसनीय है। Dr. Samira Abubaker और Dr. Kasaunde Mwinga द्वारा 22 जुलाई, 2017 से 26 जुलाई, 2017 तक परियोजना क्षेत्र के पी0एच0सी0/सी0एच0सी0 और ग्राम्य सहायक केंद्रो पर भ्रमण कर परियोजना के कर्मचारियो, और समुदाय के लोगो से बात कर सतुष्ट हुये। वे परियोजना निदेशक श्री आलोक कुमार महाप्रबंधक चाईल्ड हेल्थ डॉ0 अनिल वर्मा और किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मदनलाल ब्रह्म भट्ट से मिले तथा कुलपति प्रो0 भट्ट द्वारा परियोजना की सरहना की गई और मा0 कुलपति ने इस परियोजना की लगातार सहयोग प्रदान करने का अश्वासन प्रदान किया है।